सभ्यता का उदय और जंतु विनाश

गंगानन्द झा

मनुष्य के पूर्वज करीब सत्तर लाख साल पहले अफ्रीका में प्रकट हुए और करीब पचास या साठ लाख साल पहले तक अफ्रीका में ही सीमाबद्ध रहे। प्रायः साठ लाख साल तक इनका क्रमशः विकास होता रहा। इन परिवर्तनों में से पहला परिवर्तन करीब चालीस लाख साल पहले हुआ जब, जैसा कि जीवाश्म के रूप में सुरक्षित हड्डियां दिखलाती हैं, हमारे पूर्वज सामान्य तौर पर पिछली दो टांगों पर सीधे खड़े होकर चला करते थे। इसके फलस्वरूप हमारे पूर्वजों की अगली दो बांहें दूसरे काम करने को आज़ाद हो गईं - इनमें औज़ार बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण था। हमारे पूर्वजों द्वारा पत्थर के औज़ारों का नियमित रूप से इस्तेमाल शुरू करना, इन महान परिवर्तनों में से आखरी परिवर्तन था, जिसने हमारे पूर्वजों को वानर कम और मनुष्य अधिक बनाना शुरू किया।

मनुष्य के पूर्वजों में प्रायः साठ लाख साल तक क्रमशः विकास होते रहने के बाद करीब एक लाख और पचास हज़ार साल पहले के बीच की अल्प अवधि में प्राक् मानव का आधुनिक मनुष्य के रूप में रूपान्तर हो गया। इस अपेक्षाकृत कम अवधि में हुए रूपान्तर को 'आगे की ओर महान छलांग' कहा गया है। सवाल उठता है कि आगे की ओर के इस महान छलांग का आधार क्या था?

दो प्रकार की व्याख्याएं मिली हैं। एक, गले के स्वर-यन्त्र में ऐसे परिवर्तन हुए, जिनसे आधुनिक भाषाओं के लिए शारीरिक आधार की संरचना का उदय हुआ। इस पर मनुष्य की सृजनशीलता निर्भर करती है। दूसरी व्याख्या के अनुसार उस कालखण्ड में मनुष्य के मस्तिष्क के आकार में किसी बदलाव के बगैर, संरचना में परिवर्तन ने आधुनिक भाषा को सम्भव बनाया। मनुष्य के इतिहास का सिंहनाद करीब पचास हज़ार साल पहले हुआ, जिसके दूरगामी प्रभाव हुए और मानव सभ्यता की नींव पड़ी।

यूरेशिया की चौहद्दी के बाहर मनुष्य का पहला प्रामाणिक भौगोलिक प्रसार और आगे की ओर महान छलांग एक ही समय में हुए। इसके फलस्वरुप ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूगिनी में मनुष्य का दखल हुआ। इसका काल लगभग 50,000 से 30,000 साल पहले समझा जाता है। प्रारंभिक प्रवास के कुछ ही समय बाद मनुष्य पूरे महादेश में फैल गए और अपने आपको न्यूगिनी के उष्णकटिबन्धीय वर्षा वनों तथा ऊंचे पहाड़ों से लेकर ऑस्ट्रेलिया के भीतरी सूखे क्षेत्र तथा दक्षिण-पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के नम हिस्से तक के विविध प्राकृतिक आवासों में अनुकूलित कर लिया।

ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी का उपनिवेशीकरण मनुष्य द्वारा नाव के प्रथम उपयोग एवं यूरेशिया पहुंचने के बाद बड़े पैमाने पर प्रथम विस्तार के अलावा एक और प्रथम के साथ जुड़ा हुआ था। वह प्रथम था मनुष्य द्वारा बड़े आकार की जंतु प्रजातियों का वंश-उन्मूलन। आज अफ्रीका को विशाल स्तनपाइयों का महादेश कहा जाता है। आधुनिक यूरेशिया में भी बहुत से बड़े स्तनपायी जंतु (जैसे एशियाई गैंडें, हाथी एवं बाघ) हैं। युरोप में मूज़ (बड़े हिरण) और भालू हैं और कुछ सौ साल पहले तक शेर भी थे (पर अफ्रीका के पैमाने पर नहीं)। आज के ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी में इतने बड़े स्तनपायी जंतु बिलकुल नहीं हैं। यहां पाए जाने वाले सबसे बड़े जंतु एक सौ पाउंड वज़न के कंगारू हैं। लेकिन कभी ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी के भी अपने दैत्याकार कंगारू, डिप्ट्रोडॉण्ट नाम के गैंडें सदृश तथा लायन मार्सुपियल जैसे वृहदाकार जानवर हुआ करते थे। यहां 400 पाउंड वज़न के शुतुरमुर्ग जैसे उड़ने में असमर्थ पक्षी, एक टन वज़न की छिपकलियां और दैत्याकार अज़गर तथा स्थलीय घड़ियाल हुआ करते थे।

उपलब्ध जीवाश्मीय साक्ष्य से ज़ाहिर होता है कि ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी के ये सारे दैत्याकार जंतु मनुष्य के

पहुंचने के बाद शीघ्र ही गायब हो गए। एक साथ बड़े जंतुओं का गायब होना सीधा सवाल पैदा करता है कि ऐसा क्यों हुआ?

प्रत्यक्षतः सम्भावित उत्तर यही हो सकता है कि या तो वे वहां पहुंचने वाले मनुष्यों द्वारा मार दिए गए या परोक्ष रूप से निर्मूल कर दिए गए। ध्यान देने की बात यह है कि शिकारी मनुष्यों की गैर हाज़री में लाखों सालों के दौरान इन जानवरों का विकास हुआ था।

अब हम जानते हैं कि प्रागैतिहासिक युग में आबाद हुए महासागरों के प्रत्येक द्वीप में मानव सभ्यता के उदय से उन्मूलन के दौर उठते रहे हैं। इन दौरों के शिकारों में न्यूज़ीलैंड के मोआ, मैडागास्कर के दैत्याकार लेमुर (बन्दर) और हवाई द्वीपों के बत्तख शामिल थे। इनका विकास मनुष्य के आगमन के पहले के कालखण्ड में हुआ था। इसलिए इन्होंने मनुष्य से डरना नहीं सीखा था। मनुष्य से परिचित नहीं होने के कारण ये अपने बचाव की कोई प्रवृत्ति विकसित नहीं कर पाए थे। इसलिए प्रागैतिहासिक मनुष्य को इन्हें निर्मूल करने में देर नहीं लगी।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूगिनी के दैत्यों के निर्मूलीकरण के सम्बंध में एक अवधारणा है कि करीब 40,000 साल पहले उनका भी यही हश्र हुआ। इसके विपरीत अफ्रीका और यूरेशिया के विशाल स्तनपायी आज तक जीवित हैं क्योंकि वे प्राक् मनुष्य की सोहबत में हज़ारों-लाखों सालों की अवधि में विकसित हुए थे। इससे उन्हें मनुष्य से भयभीत होने और बचने की सीख हासिल करने का पर्याप्त समय मिला। मनुष्य के शिकार करने का हुनर क्रमशः उन्नत होता रहा था। डोडो, मोआ तथा ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी के दैत्य इस मायने में बदनसीब रहे कि वे बिना किसी वैकासिक तैयारी के एकाएक हमलावर मनुष्य के रूबरू हुए जो शिकार करने के हुनर से पूरी तरह लैस थे।

लेकिन ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूगिनी के संदर्भ में इस परिकल्पना को चुनौती मिली है। आलोचक कहते हैं कि ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूगिनी के दैत्याकार जन्तुओं का मनुष्य द्वारा निर्मूलीकरण किए जाने के पक्के प्रमाण अभी तक नहीं मिले हैं। उन्मूलन अवधारणा के समर्थक जवाब में कहते हैं कि अगर उन्मूलन काफी पहले (40,000 साल पहले) और छोटी-सी अवधि में किया गया हो, तो साक्ष्य मिलने की सम्भावना न के बराबर होती है। आलोचक एक अलग परिकल्पना पेश करते हैं। शायद ये दैत्याकार जन्तु ऑस्ट्रेलिया में लगातार पड़ते रहने वाले सूखे जैसे जलवायु परिवर्तन की चपेट में आ गए हों। सवाल यह है कि जब ये जन्तु ऑस्ट्रेलिया के इतिहास के लाखों साल झेल सके तो फिर ऐसा क्यों हुआ कि मनुष्य के आगमन के साथ ही वे निर्मूल हो गए।

दैत्याकार जंतु सूखा प्रभावित मध्य ऑस्ट्रेलिया के साथ-साथ पानी से सराबोर न्यूगिनी और दक्षिण-पश्चिम ऑस्ट्रेलिया से भी लुप्त हो गए। बिना अपवाद के मरुभूमि से लेकर ठंडे वर्षा वनों, कटिबन्धीय वर्षा वनों, हर किस्म के वास-स्थान से वे लुप्त हो गए। इसलिए इस निष्कर्ष के पक्ष में अधिक युक्ति दिखती है कि मनुष्य ने प्रत्यक्ष रूप से एवं आग के उपयोग और वास स्थान के विनाश द्वारा परोक्ष रूप से इनका उन्मूलन किया।

ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूगिनी के दैत्याकार जन्तुओं के निर्मूलीकरण का इस क्षेत्र के परवर्ती इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि इन उन्मूलनों के नतीजे में पशुपालन हेतु पालतू बनाने को एक भी देशी जानवर नहीं बचा।

इस तरह हमने देखा कि ऑस्ट्रेलिया/न्यूगिनी का उपनिवेशीकरण आगे की ओर महान छलांग के समय हुआ। इसके पश्चात मनुष्य का विस्तार यूरेशिया के सबसे अधिक ठंडे भाग में हुआ। शारीरिक रूप से आधुनिक लोग, जिन्हें अत्यंत ठंडे क्षेत्रों में जीवित रहने की प्रौद्योगिकी उपलब्ध थी, करीब 20,000 साल पहले साइबेरिया में बसे। यूरेशिया के ऊनी मैमथों तथा ऊनी गैडों का उन्मूलन शायद इस आबादी के कारण ही हुआ हो।

मनुष्य ने उत्तरी और दक्षिणी अमरीका को सबसे आखिर में आबाद किया। यह अनिश्चित है कि 14-35 हज़ार साल पहले कब अमरीका में मनुष्य ने पहला उपनिवेश बनाया। अमरीका में मिला मनुष्य का सबसे पुराना अवशेष करीब 14,000 साल पहले का है। ***(स्रोत फीचर्स)***